अध्याय
02

संघवाद

संघवाद शब्द लैटिन शब्द **"foedus"** से बना है। जिसका अर्थ एक प्रकार का **समझौता या अनुबंध।**

संघवाद की परिभाषा

ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें केंद्र और राज्य सरकार दोनों की उपस्थिति हो और दोनों स्तर की सरकारें स्वतंत्र होकर अपना काम करती है। इसे **संघात्मक शासन** व्यवस्था कहते हैं। जैसे- **भारत, बेल्जियम**

एकात्मक शासन व्यवस्था

इस शासन व्यवस्था में शासन का **एक ही स्तर** होता है और बाकी इकाइयां उसके अधीन होकर काम करती हैं इसमें केंद्र सरकार प्रांतीय या स्थानीय सरकारों को आदेश दे सकती है। जैसे- **अमेरिका, ब्रिटेन**

© JCERT not to be republished

संघवाद की विशेषताएं

- शासन के दो या दो से अधिक स्तर
- पृथक- पृथक क्षेत्राधिकार (संविधान में वर्णित)
- स्वतंत्र न्यायपालिका
- शक्तियों का विभाजन
- वित्तीय स्वायत्तता
- संविधान की सर्वोच्चता
- संविधान के मौलिक प्रावधानों में संशोधन के लिए दोनों स्तरों की सहमति।

संघीय शासन के उद्देश्य

- देश की एकता की सुरक्षा
- क्षेत्रीय विविधता को सम्मान

आदर्श संघीय व्यवस्था के दो पक्ष

- आपसी भरोसा व तालमेल
- साथ रहने पर सहमति

संघवाद की समस्याएं

- क्षेत्रवाद (गोरखालैंड, हरित प्रदेश)
- राष्ट्रपति शासन
- भाषा आधारित राज्य

भारत में संघीय व्यवस्था

आजादी के कुछ समय बाद ही भारतीय संविधान के अनुच्छेद 1 में भारत को राज्यों का संघ घोषित किया गया है। भारतीय संघ का गठन संघीय शासन व्यवस्था के सिद्धांत पर हुआ है।

- भारत ने संघीय शासन व्यवस्था का मॉडल कनाडा से लिया है।
- संविधान में स्पष्ट रूप से केंद्र और राज्य सरकारों के बीच विधायी अधिकार को तीन भागों में (तीन सूचियों) बांटा गया है। केंद्र सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची।

सूची	कानून बनाने का अधिकार	विषय
केंद्र सूची	केंद्र सरकार	प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार, मुद्रा
राज्य सूची	राज्य सरकार	पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई
समवर्ती सूची	केंद्र और राज्य सरकार दोनों को	शिक्षा, वन, मजदूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार इत्यादि

संघीय व्यवस्था का संचालन

भारत में संघीय व्यवस्था की सफलता का मुख्य श्रेय यहां की लोकतांत्रिक राजनीति के चरित्र को देना होगा इसी से संघवाद की भावना, विविधता का आदर और साथ-साथ रहने की इच्छा का हमारे देश के साझा आदर्श के रूप में स्थापित हुआ।

भाषायी राज्य

आजादी के बाद भारत में ऐसे राज्य जो भाषा के आधार पर बने हो साथ ही साथ भाषावार राज्य बनाने से देश ज्यादा एकीकृत तथा मजबूत हुआ और प्रशासन भी पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा सुविधाजनक हो गया।

© JCERT not to be republished

स्वतंत्र भारत में भाषा के आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य आंध्रप्रदेश था।

भाषा – नीति

हमारे संविधान में किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया। संविधान के अनुसार सरकारी कामकाज की भाषा के तौर पर अंग्रेजी का प्रयोग 1965 ई० में बंद होना चाहिए था परंतु कुछ दक्षिण भारतीय राज्यों ने इसका विरोध किया।

संविधान में हिंदी के अलावा अन्य 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया हैं।

केंद्र– राज्य संबंध

आजादी के बाद से लेकर 1990 ई० तक हमारे यहां एक ही पार्टी का केंद्र और अधिकांश राज्य में शासन रहा है। इसका व्यावहारिक मतलब यह हुआ कि राज्य सरकारों ने सहायक संघ के इकाई के रूप में अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं किया।

1990 ई० के बाद यह स्थिति काफी बदल गई इस अवधि में देश के अनेक राज्यों में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। इसी दौर में केंद्र में गठबंधन सरकार की शुरुआत हुई।

गठबंधन सरकार

एक से ज्यादा राजनीतिक पार्टियों द्वारा साथ मिलाकर बनाई गई सरकार को गठबंधन सरकार कहते है।

गठबंधन सरकार के कारण सत्ता में साझेदारी और राज्य सरकारों की स्वायत्तता का आदर करने की नई संस्कृति का विकास होना शुरू हुआ।

भारत मे लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण

जब केंद्र और राज्य सरकार से शक्तियां लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती है तो इसे सत्ता का विकेंद्रीकरण कहते है। विकेंद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य अनेक मुद्दों और समस्याओं का निपटारा स्थानीय स्तर पर ही बढ़िया तरीके से हो सकता है। 1992 ई० में संविधान में संशोधन करके लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के तीसरे स्तर को ज्यादा शक्तिशाली और प्रभावी बनाया गया।

73वां संविधान संशोधन –1992 (ग्राम पंचायत)

74वां संविधान संशोधन– 1993 (शहरी निकाय)

स्थानीय स्वशासन

गांव और जिला स्तर के शासन को ही स्थानीय स्वशासन कहते हैं। गांव के स्तर पर मौजूद स्थानीय स्वशासन व्यवस्था को पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। पंचायती राज प्रणाली एक त्रिस्तरीय प्रणाली हैं। शहरी क्षेत्र में मौजूद स्थानीय स्वशासन व्यवस्था को नगर पालिका और नगर निगम के नाम से जाना जाता है।

नगरपालिका

छोटे शहरों के स्थानीय स्वशासन की संस्था को नगरपालिका कहते हैं। इसके राजनीतिक प्रमुख को नगरपालिका अध्यक्ष कहते है।

नगरनिगम

बड़े शहरों के स्थानीय स्वशासन की संस्था को नगर निगम कहते हैं इसके राजनीतिक प्रमुख को मेयर कहते हैं।

© JCERT not to be republished

ग्राम सभा

गांव में पंचायत की मतदाता सूची में पंजीकृत सभी मतदाता ग्राम सभा के सदस्य होते हैं।

ग्राम पंचायत

प्रत्येक गांव में ग्राम पंचायत होती है। इसके सदस्य वार्ड से चुने जाते है। अध्यक्ष को प्रधान या सरपंच कहा जाता है। इनका चुनाव वार्ड में रहने वाले सभी वयस्क लोग मतदान के जरिए करते है।

पंचायत समिति

कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति का गठन होता है। इसके सदस्यों का चुनाव उस इलाके के सभी पंचायत सदस्य करते हैं

जिला परिषद

किसी जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद का गठन होता है जिला परिषद के अधिकांश सदस्यों का चुनाव होता है।

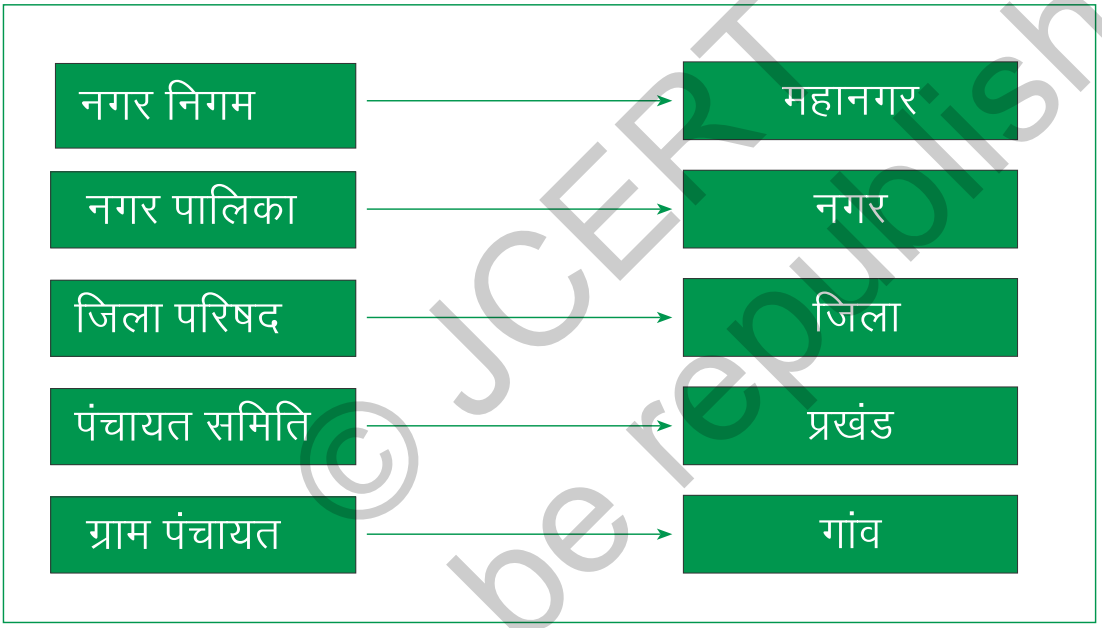

स्मरणीय तथ्य

पंचायती राज दिवस – **24 अप्रैल**

बलवंत राय मेहता समिति– **1957**

सामुदायिक विकास कार्यक्रम – **1952**

देश की पहली त्रिस्तरीय पंचायत– **नागौर (राजस्थान)**

स्थानीय स्वशासन का जनक का – **लार्ड रिपन**

पंचायत संविधान के किस भाग में है– **भाग 9**

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारत की शासन व्यवस्था किस प्रकार की है?

   a. एकात्मक b. संघात्मक

   c. दोनो d. कोई नही

2. भाषा के आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य कौन सा है?

   a. केरल b. तमिलनाडु

   c. आन्ध्र प्रदेश d. गुजरात

3. भारत ने संघीय शासन व्यवस्था का मॉडल किस देश से लिया है?

   a. अमेरिका b. ब्रिटेन

   c. सोवियत संघ d. कनाडा

4. संविधान में हिंदी के अलावा कितनी भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया है?

   a. 21 b. 23

   c. 25 d. 24

5. पंचायती राज से संबद्ध 73 वां संविधान संशोधन किस वर्ष पारित हुआ?

   a. 1987 b. 1990

   c. 1992 d. 1995

लघुउत्तरीय प्रश्न

6. संघात्मक शासन व्यवस्था से क्या समझते हैं?
7. गठबंधन सरकार से क्या समझते हैं?
8. संघवाद की विशेषताएं बताइए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. संघवाद का वर्णन कीजिये।
10. भारत मे लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का वर्णन कीजिए।

© JCERT not to be republished